ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 4 अंक : 2 दिसम्बर 2013 - जनवरी 2014 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

मकर संक्रांति पर दान का महत्व	डा. महेश पारासर	2
परीक्षा में अपेक्षित सफलता क्यों नही?	डा. रचना के भारद्वाज	4
समझदार होते हैं मकर लग्न वाले	डा. शोनू मेहरोत्रा	5
नये साल में कैसे करे लक्ष्य प्राप्ति?		
कुछ वास्तु पयोगी टिप्स	श्रीमती कविता अगरवाल	6
संक्रान्ति व्रत	प. ब्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी	7
रंग और आपका व्यक्तित्व	श्री पवन कुमार मेहरोत्रा	8
ग्रहयोग बताते हैं		
आप कंजूस हैं या अपव्ययी?	पं. अजय दत्ता	9
विपरीत राजयोग	सीताराम सिंह	10
जल बिना सब सूना	श्री सुरेश अग्रवाल	11
दिशा को बदल दें आपकी दशा	रेनू कपूर	12
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	13–14
फैसला	विजय शर्मा	15
पूजा – सामिग्री		20

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार का विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रार्थित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा Aydee Offset 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा– से छपवाकर FF-6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। **RNI No. UPHIN/2010/44791**

माना जाता है। चंदन से अष्ट दल कमल बनाकर उसमें सूर्यदेव की स्थापना कर विधिपूर्वक पूजन करना श्रेयस्कर होता है।

मकर संक्रांति पर्व का सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्वरूप सूर्य साधना है। सूय के बिना किसी भी वस्तु के दृश्य अदृश्य की कल्पना नहीं की जा सकती, सूर्य के 12 स्वरूप हैं, ये बारह अदिति (सूर्य) व इनकी बारह शक्तियां निम्न हैं–

अदिति/सूर्य	शक्तियां	अदिती/सूर्य	शक्तियां
वरूण	ईड़ा	गभस्तिक	महाकाली
सूर्य	सुषुम्ना	रवि	कपिला
सहकृांशु	विश्वार्चि	पर्जन्य	प्रबोधिनी
धता	इन्दु	त्वष्टा	नीलाम्बर
तपन	प्रमर्दिनी	मित्रा	वनान्तस्था
सविता	प्रहर्षिणी	विष्णु	अमृताख्या

इस साधना को मकर संक्रांति या किसी भी रविवार के दिन संपत्र किया जा सकता है। इस दिन भोजन में तिल या नमक का परहेज करें। प्रातः सूर्योदय से पहले उठकर श्वेत वस्त्र धरण करें, सूर्य की ओर मुंह कर सूर्य नमस्कार करें। एक ताम्र पात्र में पुष्पों के साथ तीन बार अर्घ्य अर्पित करें। फिर साधक अपने सामने सूर्य की प्राण ऊर्जा से चैतन्य व मंत्र सिद्ध **'सूर्य यंत्र'** को स्थापित कर उस पर चंदन से तिलक करें तथा सुपारी एवं लाल पुष्प अर्पित करें

शेष पेज 19 पर.....

अमृत वचन

उत्तम व्यक्ति सेवा खोज लेता है, मध्यम व्यक्ति संकेत पाकर सेवा करते है, तीसरे नम्बर के व्यक्ति आज्ञा पाकर सेवा करते हैं।

पाठकों के पत्र

परम् श्रद्धेदय पारासर जी,

जब से आपकी पत्रिका प्रकाशित हो रही है मैं उसका नियमित पाठक हूँ। पिछले कुछ सालों से पत्रिका में निरन्तर निखार आ रहा है। पत्रिका की साज–सज्जा में बदलाब करके आपने सराहनीय कार्य किया है। आपकी पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

सधन्यवाद

शैलेश शर्मा, ग्वालियर।

आदरणीय पारासर जी,

पत्रिका का दीपावली अंक निसन्देह बहुत अच्छा था। पत्रिका में प्रकाशित यंत्र अच्छे लगे। मैने मी स्वास्थ्य लाभ पोटली मंगाई। लाभ हुआ है। जिसके लिए धन्यवाद।

राम किशन मौर्य – टून्डला।

आपके प्रश्नों के समाधान

प्रश्न1. आर्थिक स्थिति खराब है। धन प्राप्ति के उपाय बतायें।

राधा शर्मा, लुधियाना।

उत्तर– समय अनुकूल चल रहा है। फरवरी 2015 के बाद स्थिति उत्तम रहेगी। लक्ष्मी जी की पूजा प्रत्येक शुक्रवार अवश्य करें। साढ़े छः रत्ती का पुखराज रत्न धारण करे। अवश्य लाभ मिलेगा।

प्रश्न2. स्वास्थ्य खराब रहता है। कृपया उचित उपाय बताने की कृपा करे।

अनिकेत गुप्ता, दिल्ली।

उत्तर–मोती–माणिक का लकेट गले में धारण करें। प्रत्येक बुधवार गाय को हरा चारा खिलायें। गणेश जी की पूजा अवश्य करें। सुबह शाम 1 माला गायत्री मंत्र का जाप करें।

डा.महेश पारासर

आपकी वास्तु समस्या का समाधान

समस्या 1– हमारी किचन दक्षिण–पश्चिम में स्थित है। इसका उपाय बताये।

कामिनी शर्मा, इन्दौर

समाधान– किचन का दक्षिण–पश्चिम में होना गम्भीर वास्तुदोष हैं। इससे घर के सदस्य बीमार व मानसिक समस्याओं से घिरे रहते हैं। परिवार में आपस में मतभेद रहता है। आप रसोई को दक्षिण पूर्व की ओर ले जायें। अद्भूत लाभ होगा।

समस्या 2– मेरे घर के सामने एक बहुत बड़ा पेड़ है। इसका उचित समाधान बतायें।

डी.के. गुप्ता– झाँसी

समस्या– घर के मुख्य द्वार के सामने पेड़ होना वास्तु वेधा कहलाता है। इसके हुए प्रभाव से बचने के लिए पेड़ के चारों तरफ कम के कम 2 फुट ऊँचा गोल चबूतरा बनायें। घर के मुख्य द्वार पर एक लाईट लगवाये जिससे पेड़ की परछाई मुख्य द्वार पर ना पडे। इससे लाभ मिलेगा। वास्तु बेघ का दोष कम होगा।

पं. अजय दत्ता

मो. 9319221203

समझदार होते हैं 'मकर' लग्न वाले

डा. शोनू मेहरोत्रा
वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर,
वास्तु प्रवक्ता ;अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान

आज बारी आती है मकर लग्न की। मकर राशि कालपुरूष की कुंडली में कर्म भाव में पडती है। उत्तराषाढ़ा के तीन चरण, श्रवशा के चार चरण और धनिष्ठा नक्षत्र के दो चरण से मिलकर इस राशि का निर्माण हुआ है। मकर राशि का स्वामी शनि होता है। अर्थात इस लग्न वालों का लग्रेश शनि होता है। मकर राशि दक्षिण दिशा की स्वामी और पृथ्वी तत्व की सौम्य राशि है। चर राशि होने के कारण मकर के जातकों को यात्रा करना बहुत भाता है। मकर राशि पर जब मंगल ग्रह आता है तो उच्च का हो जाता है और जब गुरू इस राशि में आता है तो वह नीच का हो जाता है। मकर राशि है तथा पीछे से इसका उदय होने के कारण इसे पृष्ठोदय कहते हैं। यह घुटने पर अपना प्रभाव डालती है। प्रायः देखा गया है कि मकर लग्न के जातक के शरीर का निचला हिस्सा दुबला पतला और निर्बल होता है। मकर वालों को हमेशा अपने पैरों का विशेष ध्यान रखना चाहिये। इस लग्न वालों की लंबाई प्रायः समान्य से कुछ ज्यादा ही होती है।

इस लग्न वाला व्यक्ति कर्मठ तो होता है। लेकिन आराम पंसद भी जबरदस्त होता है। जिस प्रकार मगरमच्छ को भोजन करने के बाद आराम के सिवाय और कुछ नही सूझता है, ऐसी ही इस लग्न वाले की भी प्रवृत्ति होती है। मकर वाला व्यक्ति बहुत उत्साही होता है। यह अपने कर्म से कमी पीछें नहीं हटता है। प्रायः देखा गया है कि इनका सीना और सिर बड़ा होता है। जिन जातको का सिर बड़ा होता है वह बहुत समझदार होते है। मकर के जातकों में एक विशेष गुण होता है। कि वे जब भी किसी वस्तु को पकड लेते हैं तो उसे मगरमच्छ की तरह उदरस्थ कर लेते है। कहने का आशय है कि मकर वाला व्यक्ति किसी एक विषय पर महारत हासिल कर लेताहै। मकर वालों के लिये शनि का बलवान होना बहुत जरूरी होता है। शनि के बलवान होने से जातक समझदार और नौकरी पंसद होता है। यह अपने मालिक की मन लगाकर ईमानदारी से सेवा करता है। इस लग्न वालों का कर्क तुला, वृष, मकर, कुंभ, वाले लोगों से अच्छा प्राकृतिक तालमेल होता है। बेहतरीन भोजन के बहुत शोकीन होते है।

इनका कर्म क्षेत्र जिस विषय में होता है उस विषय को यह वहुत अच्छी तरह से समझ लेते है। मकर वाला जातक औसत से कहीं ज्यादा समझदार होता है। ये लोग अपने का ज्यादातर समय ऑफिस में ही गुजार देते हैं। एक बात और मकर लग्न के बच्चों के अभिवाकों को उन्हे पढ़ने के विषय सोच समझकर दिलायें, अच्छा तो यह कि मकर वाला बच्चा खुद ही अपना विषय अपनी रूचि के साथ चुने। एक बात और कि मकर वाले बच्चे को कभी बीच में साइड नहीं बदलनी चाहिए। मकर वालों को विषय रूचि के हिसाब से न मिले तो उसकी प्रगति नही हो पाति है। क्योकि बीच में साइढ चेंज कराना उसके भविष्य के साथ बहुत बड़ा खिलवाड़ होगा। मकर वालों के जीवन में अनेक कठिनाईयाँ आती है लेकिन यह डटकर उसका सामना करता है और विजयी भी होता है। इस लग्न वालों के साथ न भूलने की खास बात होती है। यदि कोई व्यक्ति इसको हानि पहुंचाता है तो उसको कभी भूलते नही हैं। यह गलतियाँ दुबारा कम करते है। यह अपने विचारों को हमेशा स्पष्ट रखते है। यह प्रत्येक कार्य सावधानी के साथ करता है। अच्छे कर्मो को करने में रूचि रखता है। यह आपने अधीनस्थ लोगो से कार्य लेने मं बहुत निपुण होता है। मकर वाला अपने काम को बहुत रस ले कर करता है। मकर वाला व्यक्ति भक्ति भी एक सीमा तक करता है क्योकि मूलतः वह भौतिकवादी होता है। उसे संसारिक सुख

शेष पेज 19 पर.....

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

संक्रान्ति व्रत

पं. ब्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी
भागवताचार्य

भारतीय संस्कृति में प्रत्येक दिन कोई ना कोई व्रत होता ही है; परन्तु संक्रान्ति व्रत का अपना एक विशेष महत्व है। वर्ष में आने वाली मेष, वृष मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन की संक्रान्ति में कल्याण चाहने वाले स्त्री पुरूषों को निश्चय ही संक्रान्ति व्रत का पालन करना चाहिए। संक्रान्ति का अभिप्राय भगवान सूर्यनारायण के एक राशि से दूसरी। राशि में प्रवेश के समय से हैं। उस प्रवेश समय को संक्रान्ति कहा जाता है तथा जिस राशि में भगवान सूर्य देव का प्रवेश होता है उसे उसी राशि वाली संक्रान्ति का नाम दिया जाता है; जैसे ज्येष्ठ मास में सूर्य वृष राशि से मिथुन राशि में प्रवेश कर रहे हैं तो यह संक्रान्ति मिथुन संक्रान्ति के नाम पर प्रसिद्ध है। इस प्रकार प्रत्येक संक्रान्ति का नामोल्लेख है। इस संक्रमण समय पर पूजा पाठ दानादि का विशेष महत्व शास्त्रों में वर्णित है। दानादि के लिए पुण्यकाल भी निश्चित है। यथा–

संक्रान्ति	पुण्य काल घड़ी पहले	पुण्य काल घड़ी बाद	अन्यदान के अलावा विशेष दान
1–मेष	10	10	मेष दान या मंगल की वस्तुऐं
2–वृष	16	X	गाय
3–मिथुन	X	16	वस्त्र, अन्न, सवारी
4–कर्क	30	X	घी, निर्मित
5–सिंह	16	X	सुवर्ण सहित छाता
6–कन्या	X	16	वस्त्र व घर
7–तुला	10	10	तिल व गोरस
8–वृश्चिक	16	X	दीपदान
9–धुन	X	16	वस्त्र व यान
10–मकर	X	40	(हेमाद्रि मत)
	X	20	(माधन मत)
11–कुम्भ	16	X	गायों को जल व घास
12–मीन	X	16	स्थान व मालायें

विशेष:- उपरोक्त व्याख्यान कमलाकर भटट् के संग्रहीत श्लोकों का भाव है। विशेष बात में बताया गया है कि उपरोक्त के अलावा यदि वह संक्रान्ति (सायंकाल) सूर्यास्त के पहले समय हो तो उतना ही पहले (पूर्व) घड़ी तक पुण्य काल होता है। यदि जिस संक्रान्ति का पहले पुण्यकाल हो वह यदि सूर्यादय के समय हो तो उतनी घड़ी पुण्यकाल बाद में होता है। क्योंकि रात्रिकाल में संक्रान्ति जन्य पुण्य का निषेध कहा है। यदि आधी रात के पूर्व संक्रान्ति हो तो पहले रोज के दो प्रहर (दो याम) में पुण्यकाल होता है। यदि आधी रात्रि के मध्य में (पर) संक्रान्ति हो तो पर दिन के दो प्रहर में पुण्यकाल होता है। इसी प्रकार कर्क संक्रान्ति तथा मीन संक्रान्ति में जानना चाहिए। यह हेमाद्रि और अपरार्क ने कहा है।

यह मीन संक्रान्ति प्रदोष समय में या आधी रात के समय हो तो दूसरे दिन में पुण्यकाल होता है। यदि कर्क संक्रान्ति प्रातःकाल में या आधी रात में हो तो पूर्व दिन में पुण्यकाल होता है यह माध ाव आचार्य का मत है।परन्तु सभी विद्वानों ने संक्रान्ति के पूर्व और पर सोलह–सोलह घड़ी पुण्यकाल सामान्य रीति से बताया है।

संक्रान्ति व्रत में प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त होकर चौकी पर नवीन वस्त्र बिछाकर अक्षतों से अष्टदल कमल बनाकर उसमें भगवान भुवन भाष्कर की मूर्ति स्थापित करके गणेश गौर्यादि देवताओं का पूजन करके सूर्य नारायण भगवान का षोडशोपचार पूजन स्वास्तिवाचन संकल्पादि कृत्यों के साथ पुण्याहवाचन कर करना चाहिए। स्वयं ना कर सकें तो विद्वान् ब्राहाणों की सानिध्यता में सम्पन्न करें। ऐसा करने से सम्पूर्ण पातकों का नाश हो जाता है। सुख–सम्पत्ति, आरोग्य, बल, तेज, ज्ञानादि की प्राप्ति होती है। मान–सम्मान, प्रतिष्ठा, कीर्ति में वृद्धि होती है। शत्रुओं का मान–मर्दन होता है। वाणी की प्रखरता व आयुष्य लाभ होता है। यदि किसी माह की संक्रान्ति शुक्ल पक्ष की सप्तमी और व रविवार को हो तो उसे **'महाजया संक्रान्ति '** कहते हैं। उस दिन उपवास, जप, तप, देवपूजा, पितृ–तर्पण तथा ब्राहणों को भोजन कराने से अश्वमेध ा यज्ञ के समान फल प्राप्त होता है। व्रती को स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती है। प्रत्येक संक्रान्ति में व्रती जागरण करने से स्वर्ग को जाता है। जब संक्रान्ति अमावस्या तिथि में हो तो शिव और सूर्य का पूजन

शेष पेज 18 पर.....

ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र सीखिये
प्रमाण पत्र अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.) नई दिल्ली द्वारा
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़,
आगरा। फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719666777
ई मेल : mail@bhavishydarshan.in

ग्रहयोग बताते हैं आप कंजूस हैं या अपव्ययी?

पं. अजय दत्ता
ज्योतिष एवं वास्तु परामर्शदाता

सर्वप्रथम यह जानना आवश्यक है कि कंजूस और मितव्ययी में क्या अन्तर है। कंजूस उसे माना जाता है जो कि आवश्यक खर्चो को रोक कर भी धन संचय करे तथा मितव्ययी व्यक्ति वह होता है। जो कि आवश्यक होने पर ही धन खर्च करता है तथा खूब सोच–विचार कर ही पैसा खर्च करता है।

मितव्ययी व्यक्ति के सामान्य लक्षण

1. एक व्यक्ति प्रायः अपनी वस्तुओं को संभालकर रखता है तथा ऐसे लोगो के पास पुरानी वस्तुएँ मिलती हैं।

2. बाजार से कोई वस्तु खरीदते समय उसका, मोल– तोल या सही मूल्य की अनेक स्थान से जाँच अवश्य करते है।

3. किसी भी कार्यक्रम या आयोजन का प्रबंधन करते समय व्यय की पूर्व योजना बनाते है।

4. अन्तर्देशीय या लिफाफे का प्रयोग आवश्यक होने पर ही करते हैं। सामान्य सूचना के आदान–प्रदान के लिए पोस्टकार्ड का ही प्रयोग करते है तथा पत्र भी संक्षिप्त लिखते है

5. जेब या पर्स में रूपए व्यवस्थित रूप से क्रमानुसार रखते है। इन्हें प्रायः मालूम रहता है कि इनक पास कितनी धनराशि जेबों में है।

6. वाहन धीरे एंव संभलकर चलाते है।

अपव्ययी व्यक्ति के व्यवहारिक लक्षण

1. सामान्य एंव आवश्यक कारणों से टेलीफोन करते हैं।

2. टेलीफोन पर बिना आवश्यक कारण के देर–देर तक बाते करते है।

3. महिलाएँ कपड़े धोने में व्यर्थ पानी बहाती है।

4. असावधानी से वाहन चलाते हैं।

5. चलते समय धूल उड़ाते एंव आवाज करते है।

6. व्यर्थ में कागज, अखवार एंव कपड़े फाड़ने वाले व्यक्ति

7. अनावश्यक रूप से घूमने फिरने वाले व्यक्ति।

किसी व्यक्ति की व्यय करने की प्रकृति का विचार कुंडली के द्वादश भाव से किया जाता है। अतः द्वादश भाव, द्वादशेश एंव द्वादश भाव से संबंधित ग्रह किसी व्यक्ति की खर्च करने की आदत को प्रभावित करते है।

व्यक्ति के व्यय की आदत का पता कुंडली के निम्नलिखित तथ्यों के अध्ययन से किया जा सकता है।

1. लग्न एंव लग्नेश (स्वंय के प्रतिनिधि)

2. द्वादश भाव एंव द्वादशेश (व्यय के प्रतिनिधि)

3. चन्द्र की स्थिति (मन का कारक)

व्यय की प्रकृति के प्रमुख योग

1. लग्न एंव लग्नेश स्थिर राशि में हों, तो जातक मितव्ययी होता है। यदि लग्न एंव लग्नेश बली हों तथा शुभ प्रभाव में हों, तो व्यक्ति कंजूस नही होता है।

2. लग्नेश केन्द्र–त्रिकोण में नहीं हो तथा अशुभा ग्रहों के प्रभाव से पीड़ित हो, तो व्यक्ति अपव्ययी होता है।

3. लग्न एवं लग्नेश चर राशि में हो तो व्यक्ति कंजूस नही होता है।

4. द्वादश भाव एंव द्वादशेश चर राशि में हो तो जातक व्यय अधिक करता है।

5. द्वादश भाव में अशुभ ग्रह जातक से अपव्यय कराते है।

6. द्वादशेश चर या द्विस्वभाव में हो तथा अशुभ ग्रह के प्रभाव में हो तो, जातक अपव्यय करता है।

7. चंद्र यदि चर राशि में हो तो जातक खर्च करने में उदार होता है। लग्न, धनभाव, चतुर्थ भाव या द्वादश भाव में चन्द्र चर या द्विस्वभाव राशि में हो तो जातक के हाथ से खर्च अधिक होता है।

8. चन्द्रमा चूँकि शीघ्र गामी ग्रह है, अतः इसका प्रभाव जातक को धनखर्च करने के मामले में उदार बनाता है तथा जातक खर्च करने के मामले में उदार होता है। इस प्रकार लग्न, लग्नेश एंव द्वादश भाव द्वादशेश तथा चन्द्रमा की स्थिति का अध्ययन करके किसी व्यक्ति की खर्च करने की प्रवृति का पता लगाया जा सकता है तथा तीनों की स्थितियों का सामंजस्यपूर्ण अध्ययन करके फल निर्धारित करना चाहिए। ❋❋❋

घर, फैक्ट्री, दुकान, शोरूम, हॉस्पीटल, कॉलेज, पेट्रोल पम्प, सिनेमाघर,
कोल्ड स्टोरज एवं बड़े आद्योगिक प्रतिष्ठान के वास्तुदोषों का बिना
तोड़ फोड़ वैज्ञानिक निवारण एवं आंतरिक साज सज्जा
डॉ. महेश पारासर
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

जल बिना सब सूना

सुरेश अग्रवाल
आगरा

शहरों में रहने वाले और विशेषतया वे परिवार जिनके घरों में नल लगे हुए है, इस बात को जल्दी नही समझ सकते कि पानी के अभाव के करोडों लोगों को कितना कष्ट सहन करना पड़ता है।

अमेरिका आदि आधुनिक देशों में तो, जिन स्थानों में पानी की कमी होती है, सरकार समुद्र के पानी को मीठा बनाकर वहीं के नागरिकों की आपूर्ति करती है, पर भारत में समुद्र के पानी को मीठा बनाने की योजना एक दिवास्वप्न ही प्रतीत हो रही है। हमारे देश के लाखों गावों जहाँ कुएँ बहुत कम गहरे हैं अथवा बोरिंग का पानी सूख जाता है अथवा पानी की ऊँची टाकियाँ शो पीस बन कर रह गई हैं, वहाँ के निवासियों को थोडे से पानी के लिए जितना परिश्रम और प्रयत्न करना पड़ता है, इसको भुक्त भोगी ही जानते हैं। जहां मनुष्यों को पीने के पानी के लिए इतना कष्ट सहन करना पड़ रहा है। वहाँ पशुओं की क्या दशा होती होगी, इसकी कल्पना से ही मन दुख से भर जाता है। कैसे खेद की बात है कि ये गरीब लोग पूरा पानी भी नहीं पाते अथवा दो दो चार चार कि.मी. से पानी लाकर प्यास बुझाते हैं। जबकि नगरों में लाखों व्यक्तियों के यहाँ चाय, कॉफी, शर्बत, कोका कोला आदि की ही भरमार होती रहती है।

लगभग 80 बर्ष पूर्व महापुरूष विनाबा भावे के साथ बिहार के गाँवो की पद–यात्रा करते समय ऐसा ही दृश्य जब '' जानकी मैया '' ने देखा, तो उनका हदृय करूणा से ओत प्रोत हो गया। उन्होने इस जल त्रासदी की गम्भीरता को एक जन–आन्दोलन के रूप में प्रारम्भ करने का पवित्र संकल्प लिया।

पीडित और अभाव ग्रस्त जनता के लिए हार्दिक सहानुभूति और सेवा भावना रखने वाली '' जानकी भैया '' का पूरा नाम श्रीमती जानकी देवी बजाज था जो भारत के स्वाधीनता संग्राम के एक सुद्वढ़ स्तम्भ श्री जमाना लाल बजाज की धर्मपत्नी थी। ये महात्मा गाँधी तथा बिनोवा जैसे युगपुरूषों के सान्निध्य में रहकर, रूढि तथा परम्पराओं से ग्रस्त मारवाड़ी महिला के बजाज नये परिवर्तनों सुधारों और आन्दोलनों की संचालिका बन गई।प्यासे ग्रामीणों और पशुओं के लिए जानकी मैया ने 108 कूओं के निर्माण का व्रत ले लिया। लक्ष्य बडा था – इसलिए वे घर–घर जाकर महिलाओं में कूप–दान का प्रचार करने लगी। तीन–तीन चार चार मंजिल पर चढती और अपनी बात समझातीं मांगने वालों से कमी कोई खुश नहीं रहता , बस उनकी तो एक ही धुन थी कि 108 कुओं का लक्ष्य पूरा करना है। कुछ लोगों को देहात ले जाकर इस त्रासदी से रूबरू कराने का कार्यक्रम भी बनाया गया।

पहले महीने में कोई सिलसिला नहीं बना।बिनाबा जी के साथ उन्होने भ्रमण का कार्यक्रम बनाया। प्रारम्भ में 30 कुओं के लिए वचन मिले धीरे धीरे यह संख्या 79 तक पँहुच गई। इस तरह '' कूप दान'' का आन्दोलन जगह जगह फैलाकर उन्होने धनिक वर्ग में गरीबों की दशा के प्रति एक प्रकार की सहानुभूति उत्पन्न कर दी। दिल्ली जाकर पं. नेहरू से एक, हा. राजेन्द्र प्रसाद से दो, शेष 26 कुएँ गाँधी जी की उपास्थित में आयोजित राजघाट की प्रार्थना सभा पूरे हो गए। जानकी मैया के जनवत प्रयासों से ही 108 कुओं की संख्या पूरी हो सकी, कमावेश आज पूरे विश्व में पानी की समस्या विकराल रूप धारण करती जा रही है। पुराने समय से ही चाहे नील घाटी की सभ्यता हो या सिंधु घाटी की सभ्यता, सभी सभ्यताओं का जन्म नदी के किनारे या जल के स्त्रोत के पास ही हुआ। जल के अभाव में सभ्यताएँ भी नष्ट हो गई। आज वह अभाव ग्लोबल वार्मिग के रूप में सामने आ रहा है। शीतलधारा से तृप्त करने वाली गंगा, यमुना, कावेरी, गोदावरी, आदि देव नदियां अपनी दयनीय दशा पर आँसू बहा रही हैं। इनकी सफाई के लिए करोड़ो रूपये खर्च किए जा चुके हैं, लेकिन व पहले से और अधिक प्रदूषित हो चुकी हैं। गत 16 जून 2013 को आई उत्तराखण्ड की आपदा का एक कारण प्रदूषण भी है। अमेरिकी वैज्ञानिकों के अनुसार पिछले एक दशक में उत्तरभारत के कई शहरों का भूजल स्तर हर साल करीब एक फीट घट रहा है। उनके अनुसार मानवीय गलतियों की वजह से ही ऐसी स्थिति पैदा हुई है। अन्तरिक्ष एंजेसी नासा की रिपोर्ट में चेतावनी दी गई है कि यदि

शेष पेज 18 पर.....

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री,
असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक
मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

16 दिसम्बर - 15 फरवरी

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ-इस मास में स्वास्थ्य खराब रहेगा। कारोबार में हानि होने की संभावना रहेगी। सन्तानपक्ष से चिन्तायें लगी रहेगी। मास के अन्त में विशेष खर्च होने की संभावना रहेगी।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस मास में आपको प्रियजनों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। कारोबार में अधिक बदलाव होने की संभावना रहेगी। प्रियजनों से मन-मुटाव की स्थिति बनेगी। आपको सन्तान की तरफ से चिन्ता रहेगी।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। आर्थिक लाभ का सुख प्राप्त होगा परन्तु फिर भी हानि का भय लगा रहेगा। मानसिक तनाव की स्थिति बनेगी। अच्छे लोगों से मेल सूत्र जुड़ेंगे।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– यात्रा में कष्ट एवं कारोबार में रुकावटें आयेगी। आर्थिक लाभ का सुख प्राप्त होगा परन्तु फिर भी हानि का भय लगा रहेगा। व्यय अधिक रहेगा। मित्रों से पूर्ण सुख प्राप्त होगा। शत्रु पक्ष कमजोर रहेगा।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– आर्थिक लाभ होगा। कारोबार उत्तम रहेगा। प्रियजनों से मेल-जोल बढ़ेगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। नौकरी में हानि होने की संभावना रहेगी। घरेलू परेशानियां लगी रहेंगी।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो–वायु विकार, नेत्र कष्ट जैसे रोगों से आप ग्रस्त रहेंगे। प्रियजनों से मन-मुटाव की स्थिति होने की संभावना रहेगी। जायदाद संबंधित विवाद उत्पन्न होंगे। योजनायें असफल होंगी।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– अपने कार्य से आपको लाभ की प्राप्ति होगी। चोट भी लग सकती है। यात्रा में कष्ट आयेंगे। मानसिक तनाव रहेगा। व्यय अधिक रहेगा। शत्रुओं पर हावी रहेंगे।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– आपको प्रियजनो का सुख एवं साथ मिलेगा। अर्थलाभ की प्राप्ति होगी। शत्रु आप पर हावी रहेंगे। मास के अन्त में लाभ की प्राप्ति होगी। आपको अपनी पत्नि से लाभ प्राप्त होगा।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- इस मास में नेत्र कष्ट, वायु विकार, जैसे रोगों से आप ग्रस्त रहेंगे। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। नौकरी में बदलाव अधिक आने की संभावना रहेगी। व्यय अधिक रहेगा।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शत्रु आप पर हावी रहेंगे। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। घरेलू परेशानियां लगी रहेंगी। सारी योजनायें असफल रहेंगी।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- इस मास में मुकदमें में हानि होने की संभावना रहेगी। कारोबार में रुकावटें आयेंगी एवं हानि होना भी संभव है। सन्तानपक्ष से चिन्ता लगी रहेगी।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- पत्नि से मन-मुटाव होने की संभावना रहेगी। कारोंबार या व्यवसाय व नोकरी में भी कुछ रूकावटे उतपन्न होंगी। आर्थिक हानि होगी। घरेलू परेशानियां लगी रहेंगी।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद, हस्ताक्षर विशेषज्ञ

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

दिसम्बर	जनवरी
16 पूर्णिमा व्रत **17** श्री दत्तात्रोय जं. **20** सौभाग्यसुन्दरी व्रत	**1** नववर्ष प्रारम्भ (अंग्रेजी), अमावस्या **7** गुरु गोविन्द सिंह जं.
21 श्री गणेश चतु. व्र.	**8** दुर्गाष्टमी
23 अन्नपूर्णा जं., किसान दिवस	**11** श्री लाल बहादुर शास्त्री पु. दि.,
25 प्रदोष व्रत, ईसा मसीह जं.	पुत्रदा एकादशी व्रत
(क्रिश्चियन डे), पं. मदनमोहन	**13** लोहड़ी, प्रदोष व्रत
मालवीय जं. **26**कालाष्टमी व्रत	**14** मकर संक्रान्ति
28 सफला एकादशी व्रत	**15** भारतीय थल सेना दिवस, पूर्णिमा
29 स्वरूपी द्वादशी **30** प्रदो. व्र.	व्रत

ग्रहारम्भ मुहूर्त

दिसम्बर – नही है। **जनवरी**– नही है।

गृह प्रवेश मुहूत

दिसम्बर– नही हैं **जनवरी**– नही हैं।

दुकान शुरू करने का मुहूर्त

दिसम्बर–नही हैं।

जनवरी– 12, 13

नामकरण संस्कार मुहूर्त

दिसम्बर– 19, 20, 25, 30

जनवरी– 3, 13

सर्वार्थ सिद्ध योग

दिसम्बर	जनवरी
16 ता. सू.उ. से 30:35 तक	03 ता. सू.उ. से 26:03 तक
19 ता. सू.उ. से 20ता. 30:38तक	07 ता. सू.उ. से 20:20 तक
	09 ता. सू.उ. से 21:55 तक
25 ता. 19:32 से 30:38 तक	13 ता. सू.उ. से 31:21 तक
28 ता. सू.उ. से 20:08 तक	
30 ता. सू.उ. से 16:40 तक	

फैसला

(मामा की कलम से)

विजय शर्मा
आगरा

समान बल वाले के लिए सन्धि कर लेना श्रेयस्कर है।

मन्त्री गिद्ध ने सुन्द और उपसुन्द की कथा आरम्भ की–

बहुत समय पहले सुन्द और अपसुन्द नाम के दो महान् बलशाली दैत्य हुए है। उनकी अभिलाषा त्रिलोक पर एकछत्र राज्य करने की थी।

उन्होंने भगवान शंकर की तपस्या आरम्भ कर दी।

भगवान शंकर इन दोनों की तपस्या से बहुत खुश हुए।

भगवान शंकर ने दोनों को दर्शन देकर कहा, '' मैं तुम दोनों की तपस्या से प्रसन्न हूं जो वर मांगना चाहों, मांग लो।''

सास्वती की कृपा से वे दैत्य जो वर मांगना चाहते थे, न मांग पाए और कुछ का कुछ कह दिया– ''भगवान! यदि आप प्रसन्न हैं तो हमें अपनी पार्वती को वरदान में दे दीजिए।''

यह सुनकर शंकर भगवान के क्रोध की सीमा न रही, परन्तु वचनबद्ध होने के कारण उन्होंने उन दोनो को पार्वती को सौंप दिया।

पार्वती के अनुपम सौन्दर्य को देखकर दोनों उनके ऊपर लटू हो गए। दोनों ने शोर मचाना शुरू कर दिया– '' यह मेरी है– यह मेरी है।''

वे दोनों इस बात को लेकर आपस में झगड़ने लगे।

दोनो को लडते देखकर भगवान शंकर एक बूढ़े ब्राहमण के रूप में उनके पास पंहुच गये।

उन दोनों ने एक ब्राहमण को आते देखकर उस मध्यस्थ बनाने के लिए कहा, 'ब्राहाण देवता, कृपया हमारी बात सुनिए।''

''कहो भाई तुम दोनों आपस में क्यों लड़ रहे हो?'' ब्राहाण बोला।

पहला दैत्य बोला, '' महाराज! मैंने इस सुन्दरी को तप करके प्राप्त किया है। अतः यह मेरी है।''

दूसरा दैत्य बोला, जी नही! मैंने इससे अधिक तप किया है, अतः यह मेरी है।

उनकी बात सुनकर ब्राहाण बोला, देखो भाई! तुम दोनों ने एक साथ तप किया है। यह फैसला करना कठिन है कि किसने अधिक तप किया है। ज्ञान में श्रेष्ठ ब्राहाण, बल में श्रेष्ठ क्षत्रिय, धन–धान्य में श्रेष्ठ वैश्य और सेवा करने में श्रेष्ठ शुद्र होता है। ये सब अपनी अपनी जगह आदरणीय होते हैं। तुम दोनों क्षत्रिय हो और युद्ध ही तुम दोनों का फैसला कर सकता है। अतः अब आप लोग परस्पर युद्ध करें। इस तरह जो अधिक बलशाली होगा, पार्वती उसे मिल जायेगी।

सुन्द और उपसुन्द दोनों क्षत्रिय थे, उनके रक्त में सदैव युद्ध की बात समाया करती थी। वे वचपन से ही लड़ाकू स्वभाव के थे। ब्राहण की बात सुनकर उनका खून खौल उठा।

सुन्द ने उपसुन्द पर पहला बार उसके मुंह पर अपना हाथ मारकर किया। उपसुन्द से न रहा गया, वह भी तो क्षत्रिय की सन्तान था– वह भला अपने प्रतिद्वन्द्वी से कोई कम तो नही था– तपस्या यदि सुन्द ने की थी उपसुन्द ने भी वही तपस्या की थी, इसलिए वह भी किसी तरह सुन्द से कम न था, सो उसने उसके घूंसे का जवाब इस प्रकार दिया कि उसने सुन्द के पेट में अपना घूंसा बनाकर मारा, जिससे सुन्द झुकता हुआ अपने पेट पर हाथ रखकर पीछे की तरफ हटता चला गया।

कुछ क्षण तक उपसुन्द उसे देखता रहा और फिर वह आगे बढकर सुन्द का कॉलर पकड़कर उसे ऊपर की ओर खींचने लगा– सुन्द ने झुके–झुके अपने सिर का प्रहार उसके पेट पर किया जिससे दोनों ऊपर–नीचे हो गये।

सुन्द अब उपसुन्द के ऊपर था, परन्तु पकड़ उपसुन्द की मजबूत थी। उसने नीचे से अपना घुटना उसकी जांघों के बीच में डालकर उसे अपने सिर के पीछे की तरफ उड़ेल दिया और फिर

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

स्वजाति वाले ही उसे मार डालते हैं।

डरपोक मनुष्य युद्ध में पीठ दिखाकर भागने से स्वतः नष्ट हो जाता है। यदि उसके मन्त्री और सैनिक भी डरपोक हैं, तो वे राजा को रणभूमि में अकेला छोड़कर भाग जाते हैं।

लोभी राजा अपने सैनिकों व कर्मचारियों को उचित पगार नहीं देता, इसलिए विपत्ति आने पर कोई भी उसके काम नहीं आता है। कर्मचारी लोभी हों तो वे लोभवश राजा को ही मार देते है। जिस राज्य के अधिकारी और प्रजा नाराज हो और स्वंय राजा विषय–वासना में लिप्त हो तो उसे सहज ही हराया जा सकता है।

चंचल चित्त व गुप्त परामर्श को प्रकट करने वाला राजा भी मन्त्री और सेवकों के द्वारा असहयोग को पाता है।

देवता और ब्राहण की निन्दा करने वाला राजा अधर्मी हो जाता है और उसका घमण्ड ही उसे ले डूबता है। सम्पत्ति और विपत्ति का कारण भाग्य को समझने वाला निकम्मा हो जाता है।

अकाल की पीड़ा से दुःखी प्रजा वाला राजा दुर्बल होता है तथा पीड़ित सेना में लडने की शक्ति ही नहीं होती है।

पराये राज्य में रहने वाला राजा थोडे शत्रुओं से ही मारा जाता है, क्योकि जल में छोटे से छोटा मगरमच्छ भी बड़े से बड़े हाथी को खींचने की शक्ति रखता है ।

जिस राजा के अनेक शत्रु हों, उस राजा की हालत ऐसे कबूतर जैसी होती है जिस पर चारों तरफ से बाज झपट रहे हों और उसकी बचने की कोई आशा न हो।

जो राजा समय–असमय का ध्यान नही रखता, उस पर दूसरे राजा चढ़ाई कर देते हैं। वह उसी तरह मारा जाता है जैसे अंधेरे में कौए को उल्लू मार देते हैं।

सत्य व धर्म रहित राजा भी सन्धि के योग्य नही है, क्योकि झूठे और अधर्मी को वचन तोडने में देर नही लगती है।

यह भी मान लीजिए कि राजनीति के ये गुण हैं– सन्धि, विग्रह, मान आसन, संश्रय व द्वेषी (छला)।

मन्त्रणा के पांच अंग हैं काम शुरू किस ढंग से हो, सहायकों और धन धान्य का सग्रंह कैसे हो, स्थान और समयानुरूप सही नियुक्ति, सकंट दूर करना और कार्यसिद्धि के उपाय।

शत्रु को चार प्रकार से वश में लाना चाहिए– साम, दाम, भेद व दण्ड।राजा की तीन शक्तियां है– उत्साह, विचार विनिमय और प्रभुता–इन सब बातों का आश्रय लेकर ही महान् लोग शत्रु को जीतने की कामना करते है।

जो लक्षमी प्राणों की बलि लेकर भी प्राप्त नही होती, वह नीतिकुशल राजा के पास अपने आप खिंची चली आती है।

वह राजा चक्रवर्ती होता है जो अपनी सम्पति सेवकों में बराबर में बांटता रहता है, जिसकी गुप्तचर व्यवस्था मजबूत हो, जिसकी गुप्त बातें गुप्त ही रहती हों और दूतों से अप्रिय न बोलता हो।

सुनिये राजन! गिद्ध ने सन्धि करने का प्रस्ताव रखा है तो भी राजा चित्रवर्ण घमण्ड से उस पर ध्यान नहीं दे रहा है। ऐसें में आप अपने मित्र सिंहलद्वीप के राजा सारस को चित्रवर्ण के विरूद्ध भडका दीजिए।महाराज! जिस राजा को जीत की अभिलाषा हो, उसे चाहिए कि हर प्रकार से अपनी सेना संगठित करके इधर–उधर न घूमकर शत्रु को घेरकर परेशान करे, उसे तंग करके घुटने टेकने को विवश कर दे, तभी वह सन्धि के लिए तैयार होगा।

वैसे भी दो लोहे की छडों को अच्छी तरह गर्म करके जोडा जा सकता है अर्थात् समान बली से सहज में सन्धि हो जाती है।''

चकवे की बातें सुनकर राजा हिरण्यगर्भ बोला, ठीक है, ऐसा ही करते है।''

इतना कहकर विचित्र नाम के बगुले को गुप्त पत्र देकर सिंहलद्वीप के राजा सारस को भेज दिया।

तभी प्रधान गुप्तचर ने आकर कहा, महाराज! अब यह जान लीजिए जो शत्रु पक्ष में इस सतम चल रहा है।''

मन्त्री गिद्ध ने अपने राजा से कहा, राजन मेघवर्ण कौआ वहां बहुत रहा है और राजा हिरणगर्भ तथा उसके राज्य की हर बात को भली–भांति जानता–पहचानता है। वह आपको सही ही वताएगा। कि राजा हिरण्यगर्भ सन्धि के योग्य है या नही।''

राजा ने गिद्ध की बात सुनकर मेघवर्ण कौए को बुलाकर पूछा– है कौए, राजा हिरण्यगर्भ और मन्त्री चकवा कैसा है?''

कौआ प्रत्युत्तर में बोला, राजा हिरण्यगर्भ युधिष्ठर के समान सज्जन और चकवा जैसा बुद्धिमान कोई मन्त्री मैंने देखा ही नहीं।''

राजा बोला, यदि ऐसा है तो तूने उसे कैसे ठग लिया?''

मेघवर्ण हँसकर बोला– महाराज! विश्वास करने वाले मनुष्यों को ठगने में क्या चतुराई है? गोद में सुलाकर लिसक को मार डालने में कौन सी बहादुरी है। कौआ मेघवर्ण इस समय अपने आपको सच्चा साबित करने के लिए सच्चाई उगल रहा था– वह जानता था कि उसने यहां भी सच्ची–सच्ची बात न बताई तो उसके मुंह से कोई न कोई शब्द ऐसा अवश्य निकल जाता जिसे गिद्ध महाराज जरूर पकड़ लेते। उन्हीं के डर से कौआ अपनी सारी बात सच–सच बता रहा था– उसने अपनी बात जारी रखते हुए आगे बताया– ''महाराज! उस मन्त्री ने तो मुझे देखते ही पहचान लिया था, पर राजा उदार और सज्जन है इसलिए मैने उसे धोखा दे दिया। जो सत्यवादी राजा दुष्टों को भी अपने जैसा समझ लेता है, वह उसी प्रकार ठगा जाता है जैसे बकरे के कारण धूर्तों ने ब्राहण को ठग लिया।''

राजा चित्रवर्ण बोला, '' यह कैसी कथा है?''

मेघवर्ण कौआ बोला, सुनिए महाराज, मै कथा कहता हूं।''

कौआ राजा को कथा सुनाने लगा– ❋❋❋

हमारे यहा रत्नों को लेब से टेस्टिड (Lab Certified) कराकर उपलब्ध करायें जाते हैं। रत्नों की 100% शुद्धता के लिये रत्न के साथ उसकी शुद्धता का सर्टीफीकेट दिया जाता हैं।

शेष पेज 03 से आगे.....

और सिन्दूर को घोलकर यंत्र के दांई और बांई ओर सूर्य का चित्र बनाए तथा पुष्पांजलि अर्पित करते हुए प्रार्थना करें–

हे आदित्य! आप सिन्दूर वर्णीय, तेजस्वी मुख मण्डल, कमल नेत्र स्वरूप वाले ब्रह्मा, विष्णु तथा रूद्र सहित सृष्टि के मूल कारक हैं, आपको इस साधक का प्रणाम! आप मेरे द्वारा अर्पित कुंकुम, पुष्प, सिन्दूर एवं चंदनयुक्त जल का अर्घ्य ग्रहण करें।

इसके साथ ही कलश में जल लेकर दोनों हाथों से सूर्य को जल की धारा से तीन बार अर्घ्य दें। अब अपने पूजा स्थान में सूर्य यंत्र के चारों ओर एक चक्र में '12 सुपारियां' स्थापित करें, जो कि सूर्य के बारह स्वरूप हैं। उन्ही बारह स्वरूपों का ध्यान करते हुए चक्रों पर चंदन एवं सिंदूर अर्पित करें। यंत्र के समक्ष किसी पात्र में तिल और गुड़ से बना नैवेद्य अर्पित करें। फिर अपने ललाट पर सिन्दूर का तिलक कर निम्न मंत्र का आध घण्टा जप करें–

सूर्य मंत्र– ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूयार्य नमः

पूर्ण जप काल में दीपक जलते रहना अनिवार्य है। मंत्र जप पूर्ण होने पर दीपक से आरती संपन्न करें और इस ज्योति पर हाथ फेर कर अपने दोनों हाथों को नेत्रों से स्पर्श करायें। बाद में यंत्र/सामग्री को जल में विसर्जित कर दें।

शेष पेज 05 से आगे .....

में ज्यादा आनन्द प्राप्त होता है। अपना काम निकालने के लिए वह कुछ भी कर सकता है। वह वहुत उच्चाभिलाषी होता है साथ ही अपने काम मे दम पर समूह में प्रमुख स्थान पर पंहुचता है। मकर वालों का वैवाहिक जीवन सामान्य ही रहता है।

मकर लग्न वाला जातक अपने आपको परिस्थिति के अनुसार बदल लेता है। धन के मामले मे हमेशा गणित लगाता रहा। अपने धन को योजनावद्ध तरीके से व्यय करता है मकर वालों के लिए शुक्रग्रह हमेशा फल देने वाला योगकारी होता है। इस लग्ल वालो को हीरा रत्न धारण करना चाहिए। बुद्ध भाग्येश होने के कारण मकर वालों के भाग्य का स्वामी होता है। और यदि कुंडली में बुद्ध सही स्थिति मं हो तो ऐसा जातक बहुत भाग्यशाली होता है। इस लग्न वालों को अपने आत्मबल और कर्मठता को बढ़ाने के लिए नीलम रत्न धारण करना चाहिए। इस लग्न वालों को सूर्य को जल भी देना चाहिए।

विशेषताऐं

1. कर्मठ और आरामपंसद दोनो ही जवरदस्त होते है।
2. कठिनाईयों का डटकर सामने करने की क्षमता रखते है।
3. बेहतरीन भोजन खाने के बहुत शौकीन होते है।
4. एक विषय पर ही महारत हासिल करने वाले ऊँचाइयों तक जाते है।

शेष पेज 06 से आगे.....

जा सकता है। इससे कार्य पर फोकस करने में सहायता मिलती है।

कमरे में उठान के लिये हल्के रंगो का चयन करें। रंगो का चुनाव करते समय वैभाविक उददेश्यों व भविष्य को ध्यान में रखकर करें।

ताजे सुंगधित फूल लाभकारी ऊर्जा को आकर्षित करते है। इनके निकट कार्य करने वाला व्यक्ति स्वंय को स्वस्थ और सकारात्मकता से भरा महसूस करता है। गुलदाऊदी के फूल प्रसन्नता व खुशी के साथ–साथ आराम व सुकुन का भी सूचक होते है। ताजे फूल मुरझाने लगे, उन्हें तुरंत बदल दें। क्योकि मुरझाने पर ये विपरीत असर डालते है।

पाकुआ दर्पण आपकी लक्ष्यपूर्ति में सहायक सिद्ध हो सकता है। घर में अथवा कार्यस्थल पर प्रयोग करने से आपकी जीवन–शैली व्यवस्थति व्यवस्थित रहती है। यह ऊर्जा को बनाए रखता है तथा अशुभ शक्तियों से आपकी रक्षा करता है। इसका प्रयोग कार्यक्षेत्र के प्रवेश द्वार के सामने कोई पैना कोना या लिफ्ट हो तब प्रयोग कर सकते है।

झाड़ फानुस व लटकते हुये क्रिस्टल आपके लक्ष्य को पूरा करने में सहायक होते है।

अपने सोचे हुए काम को प्रारम्भ करने से पहले स्वास्तिक बनाए, ऐसा करने से प्रारम्भ किया कार्य निर्विघ्न पूरा हो जाता है।

नए साल में अपने सपने को सादार करने के लिए फब्बारा का काफी योगदान होता है। मछलीघर व फब्बारा आस–पास के वातावरण को ऊर्जावान रखता है। यह धन को भी आकर्षित करता है।

नये साल पर अपनी योजना बनाने से पूर्व तथा बाद मे चीनी जरूर खांए। किचन में चीनी रखने वाले डिव्वे को कभी खाली न रखें। नये साल पर तो बिल्कुल ही नही।

महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति हमेशा पॉजिटिव सोच रखता है। आप हमेशा ऊँचा सोचे और लक्ष्य प्राप्ति की ही बात सोचें। अगर आपको लगता है कि आपका मन भटक रहा है, मन में निराशाजनक बांते आ रही है। तो अपने कक्ष के पूवोत्तर के ईशान कोण में क्रिस्टल या रोज क्वार्टर्स के शोपीस रखें।

पुराना साल चाहें जैसा भी रहा हो नये साल में अपने अनुभवों का लाभ उठाए और वस्तु सिंद्धातो के अनुसार अपनी व्यवस्थित जीवन–शैली अपनाकर घर तथा कार्यस्थल को सक्रिय करते हुये अपने लक्ष्य की सफलता सुनिश्चित करें। ❋❋❋

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य निर्णय द्वि–मासिक पत्रिका के सदस्य अपना भवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य निर्णय द्वि–मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अतः पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, 9557775262